GLORIOUS -55

हम आपकी खिदमत में

2016-2017

कला व् संस्कृति

शिव कुमार सिंह

- **भरतनाट्यम् -तमिलनाडु**

- भरत नाट्यम, भारत के प्रसिद्ध नृत्यों में से एक है तथा इसका संबंध दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य से है भरत नाट्यम में नृत्य के तीन मूलभूत तत्वों को कुशलतापूर्वक शामिल किया गया है। ये हैं भाव अथवा मन:स्थिति, राग अथवा संगीत और स्वरमाधुर्य और ताल अथवा काल समंजन। भरत नाट्यम की तकनीक में, हाथ, पैर, मुख, व शरीर संचालन के समन्वयन के 64 सिद्धांत हैं, जिनका निष्पादन नृत्य पाठ्यक्रम के साथ किया जाता है।भरत नाट्यम तुलनात्मक रूप से नया नाम है। पहले इसे सादिर, दासी अट्टम और तन्जावूरनाट्यम के नामों से जाना जाता था। भरतनाट्यम् के कुछ प्रमुख कलाकार- लीला सैमसन, मृणालिनी साराभाई इनका अभी निधन हुआ हैविगत में इसका अभ्यास व प्रदर्शन नृत्यांगनाओं के एक वर्ग जिन्हें 'देवदासी' के रूप में जाना जाता है, द्वारा मंदिरों में किया जाता था। भरत नाट्यम के नृत्यकार मुख्यत: महिलाएं हैं, वे मूर्तियों के अनुसार अपनी मुद्राएं बनाती हैं, सदैव घुटने मोड़ कर नृत्य करती हैं। यह नितांत परिशुद्ध शैली है, जिसमें मनोदशा व अभिव्यंजना संप्रेषित करने के लिए हस्त संचालन का विशाल रंगपटल प्रयोग किया जाता है। भरत नाट्यम अनुनादी है तथा इसमें नर्तक को बहुत मेहनत करनी पड़ती है

- **कथकली-केरल -मुखौटा नृत्य इसी से सम्बंधित है ,(केवल पुरुष कलाकारों द्वारा)**

- केरल के दक्षिण - पश्चिमी राज्य का एक समृद्ध और फलने फूलने वाला नृत्य कथकली यहां की परम्परा है। कथकली का अर्थ है एक कथा का नाटक या एक नृत्य नाटिका। कथा का अर्थ है कहानी, यहां अभिनेता रामायण और महाभारत के महाग्रंथों और पुराणों से लिए गए चरित्रों को अभिनय करते हैं।कथकली अभिनय, 'नृत्य' (नाच) और 'गीता' (संगीत) तीन कलाओं से मिलकर बनी एक संपूर्ण कला है। यह एक मूकाभिनय है, जिसमें अभिनेता बोलता एवं गाता नहीं है, लेकिन बेहद संवेदनशील माध्यमों जैसे- हाथ के इशारे और चेहरे की भावनाओं के सहारे अपनी भावनाओं की सुगम अभिव्यक्ति देता है। कथकली नाटकीय और नृत्य कला दोनों है। परंतु मुख्य तौर पर यह नाटक है। यह साधारण नाटकीय कला से कहीं ज्यादा अच्छा प्रस्तुतीकरण है। यह यथार्थवादी कला नहीं है, लेकिन अपनी कल्पनाशीलता के चलते यह 'भरत नाट्यशास्त्र' के समानांनतर है। इसमें ऑर्केस्ट्रा दो मुखर संगीतकारों द्वारा बनाया जाता है, इनमें से एक 'चेंगला' नामक यंत्र के साथ गीत की तैयारी करता है और दूसरा 'झांझ' और 'मंजीरा' के

साथ मिलकर 'इलाथम' नामक जोड़ी की रचना करता है, जिसमें चेन्दा और मदालम भी प्रमुख स्थान रखते हैं। 'चेन्दा' एक बेलनाकार ढोल होता है, जो उंची लेकिन मीठी आवाज निकालता है, जबकि 'मदालम' मृदंग का बडा रूप होता है।

- **कथक नृत्य-उत्तर भारत**

- कथक का नृत्य रूप 100 से अधिक घुंघरुओं को पैरों में बांध कर तालबद्ध पदचाप, विहंगम चक्कर द्वारा पहचाना जाता है और हिन्दु धार्मिक कथाओं के अलावा पर्शियन और उर्दू कविता से ली गई विषयवस्तुओं का नाटकीय प्रस्तुतीकरण किया जाता है। कथक का जन्म उत्तर में हुआ किन्तु पर्शियन और मुस्लिम प्रभाव से यह मंदिर की रीति से दरबारी मनोरंजन तक पहुंच गया।इस नृत्य परम्परा के दो प्रमुख घराने हैं, इन दोनों को उत्तर भारत के शहरों के नाम पर नाम दिया गया है और इनमें से दोनों ही क्षेत्रीय राजाओं के संरक्षण में विस्तारित हुआ - लखनऊ घराना और जयपुरघराना।वर्तमान समय का कथक सीधे पैरों से किया जाता है और पैरों में पहने हुए घुंघरुओं को नियंत्रित किया जाता है। कथक में एक उत्तेजना और मनोरंजन की विशेषता है जो इसमें शामिल पद ताल और तेजी से चक्कर लेने की प्रथा के कारण है जो इसमें प्रभावी स्थान रखती है तथा इस शैली की सबसे अधिक महत्वपूर्ण विशेषता है। इन नृत्यों की वेशभूषा और विषयवस्तु मुग़ल लघु तस्वीरों के समान है। जबकि यह नाट्य शास्त्र के समान नहीं हैं फिर भी कथक के सिद्धांत अनिवार्यत: इसके समान ही हैं। यहाँ हस्त मुद्राओं के भरत नाट्यम में दिए जाने वाले बल की तुलना में पद ताल पर अधिक ज़ोर दिया जाता है।बिरजू महाराज इसी नृय से जुड़े हुए हैं

- ओड़िसी-**ओड़िसा**

- ओड़िसी को पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर सबसे पुराने जीवित नृत्य रूपों में से एक माना जाता है। ओड़िसा के पारम्परिक नृत्य, ओड़िसी का जन्म मंदिर में नृत्य करने वाली देवदासियों के नृत्य से हुआ था। ओड़िसी नृत्य का उल्लेख शिला लेखों में मिलता है, इसे ब्रह्मेश्वर मंदिर के शिला लेखों में दर्शाया गया है साथ ही कोणार्क के सूर्य मंदिर के केन्द्रीय कक्ष में इसका उल्लेख मिलता है। वर्ष 1950 में इस पूरे नृत्य रूप को एक नया रूप दिया गया, जिसके लिए अभिनय चंद्रिका और मंदिरों में पाए गए तराशे हुए नृत्य की मुद्राएं धन्यवाद के पात्र हैं।इसमें त्रिभंग पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, जिसका अर्थ है शरीर को तीन भागों में बांटना, सिर, शरीर और पैर; मुद्राएं और अभिव्यक्तियां भरत नाट्यम के

समान होती है। ओडिसी नृत्य में विष्णु के आठवें अवतार कृष्ण के बारे में कथाएँ बताई जाती हैं। यह एक कोमल, कवितामय शास्त्री नृत्य है जिसमें उड़ीसा के परिवेश तथा इसके सर्वाधिक लोकप्रिय देवता, भगवान जगन्नाथ की महिमा का गान किया जाता है।

- मणिपुरी-**मणिपुर**

- पूर्वोत्तर के मणिपुर क्षेत्र से आया शास्त्रीय नृत्य मणिपुरी नृत्य है। मणिपुरी नृत्य भारत के अन्य नृत्य रूपों से भिन्न है। इसमें शरीर धीमी गति से चलता है, सांकेतिक भव्यता और मनमोहक गति से भुजाएँ अंगुलियों तक प्रवाहित होती हैं। यह नृत्य रूप 18वीं शताब्दी में वैष्णव सम्प्रदाय के साथ विकसित हुआ जो इसके शुरूआती रीति रिवाज और जादुई नृत्य रूपों में से बना है। विष्णु पुराण, भागवत पुराण तथा गीत गोविंदम की रचनाओं से आई विषयवस्तुएँ इसमें प्रमुख रूप से उपयोग की जाती हैं।
- मणिपुर की मेइटी जनजाति की दंत कथाओं के अनुसार जब ईश्वर ने पृथ्वी का सृजन किया तब यह एक पिंड के समान थी। सात लैनूराह ने इस नव निर्मित गोलार्ध पर नृत्य किया, अपने पैरों से इसे मजबूत और चिकना बनाने के लिए इसे कोमलता से दबाया। यह मेइटी जागोई का उद्भव है। आज के समय तक जब मणिपुरी लोग नृत्य करते हैं वे कदम तेजी से नहीं रखते बल्कि अपने पैरों को भूमि पर कोमलता और मृदुता के साथ रखते हैं। मूल भ्रांति और कहानियाँ अभी भी मेइटी के पुजारियों या माइबिस द्वारा माइबी के रूप में सुनाई जाती हैं जो मणिपुरी की जड़ हैं।
- महिला "रास" नृत्य राधा कृष्ण की विषयवस्तु पर आधारित है जो बेले तथा एकल नृत्य का रूप है। पुरुष "संकीर्तन" नृत्य मणिपुरी ढोलक की ताल पर पूरी शक्ति के साथ किया जाता है
- महिला रास नृत्य राधा-कृष्ण की विषयवस्तु पर आधारित है जो बेले तथा एकल नृत्य का रूप है। पुरुष "संकीर्तन" नृत्य मणिपुरी ढोलक की ताल पर पूरी शक्ति के साथ किया जाता है।

- मोहिनीअट्टम-**केरल**

- मोहिनीअट्टम केरल की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला अर्ध शास्त्रीय नृत्य है जो कथकली से अधिक पुराना माना जाता है। साहित्यिक रूप से नृत्य के बीच मुख्य माना जाने वाला जादुई मोहिनीअटट्म केरल के मंदिरों में प्रमुखत: किया जाता था। यह देवदासी नृत्य विरासत का उत्तराधिकारी भी माना जाता है जैसे कि भरत नाट्यम, कुचीपुडी और ओडीसी। इस शब्द *मोहिनी* का अर्थ है एक ऐसी महिला जो

देखने वालों का मन मोह लें या उनमें इच्छा उत्पन्न करें। यह भगवान विष्णु की एक जानी मानी कहानी है कि जब उन्होंने दुग्ध सागर के मंथन के दौरान लोगों को आकर्षित करने के लिए मोहिनी का रूप धारण किया था और भामासुर के विनाश की कहानी इसके साथ जुड़ी हुई है। अत: यह सोचा गया है कि वैष्णव भक्तों ने इस नृत्य रूप को मोहिनीअट्ट्म का नाम दिया।मोहिनीअट्ट्म का प्रथम संदर्भ माजामंगलम नारायण नब्बूदिरी द्वारा संकलित व्यवहार माला में पाया जाता है जो 16वीं शताब्दी ए डी में रचा गया। 19वीं शताब्दी में स्वाति तिरुनाल, पूर्व त्रावण कोर के राजा थे, जिन्होंने इस कला रूप को प्रोत्साहन और स्थिरीकरण देने के लिए काफी प्रयास किए।कृष्णा पणीकर, माधवी अम्मा और चिन्नम्मू अम्मा ने इस लुप्त होती परम्परा की अंतिम कडियां जोड़ी जो कलामंडल के अनुशासन में पोषित अन्य आकांक्षी थीं।

- मूलभूत नृत्य ताल चार प्रकार के होते हैं: तगानम, जगानम, धगानम और सामीश्रम। ये नाम वैट्टारी नामक वर्गीकरण से उत्पन्न हुए हैं।

- कुचिपुड़ी-आंध्र प्रदेश

- कुचीपुडी आंध्र प्रदेश की एक स्वदेशी नृत्य शैली है जिसने इसी नाम के गांव में जन्म लिया और पनपी, इसका मूल नाम कुचेलापुरी या कुचेलापुरम था, जो कृष्णा जिले का एक कस्बा है। अपने मूल से ही यह तीसरी शताब्दी बीसी में अपने धुंधले अवशेष छोड़ आई है, यह इस क्षेत्र की एक निरंतर और जीवित नृत्य परम्परा है। कुचीपुडी कला का जन्म अधिकांश भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के समान धर्मों के साथ जुड़ा हुआ है। एक लम्बे समय से यह कला केवल मंदिरों में और वह भी आंध्र प्रदेश के कुछ मंदिरों में वार्षिक उत्सव के अवसर पर प्रदर्शित की जाती थी।
- परम्परा के अनुसार कुचीपुडी नृत्य मूलत: केवल पुरुषों द्वारा किया जाता था और वह भी केवल ब्राह्मण समुदाय के पुरुषों द्वारा। ये ब्राह्मण परिवार कुचीपुडी के भागवतथालू कहलाते थे। कुचीपुडी के भागवतथालू ब्राह्मणों का पहला समूह 1502 ए. डी. निर्मित किया गया था। उनके कार्यक्रम देवताओं को समर्पित किए जाते थे तथा उन्होंने अपने समूहों में महिलाओं को प्रवेश नहीं दिया।

- कुटियाट्टम-केरल

- कटियाट्टम केरल के शास्त्रीय रंग मंच का अद्वितीय रूप है जो अत्यंत मनमोहक है। यह 2000 वर्ष पहले के समय से किया जाता था और यह संस्कृत के नाटकों का अभिनय है और यह भारत का सबसे पुराना रंग मंच है, जिसे निरंतर प्रदर्शित किया जाता है।

- राजा कुल शेखर वर्मन ने 10वीं शताब्दी ए. डी. में कुटियाट्टम में सुधार किया और रूप संस्कृत में प्रदर्शन की परम्परा को जारी रखे हुए है। प्राकृत भाषा और मलयालम अपने प्राचीन रूपों में इस माध्यम को जीवित रखे हैं। इस भण्डार में भास, हर्ष और महेन्द्र विक्रम पल्लव द्वारा दिखे गए नाटक शामिल हैं।
- पारम्परिक रूप से चकयार जाति के सदस्य इसमें अभिनय करते हैं और यह इस समूह को समर्पण ही है जो शताब्दियों से कुटियाट्टम के संरक्षण का उत्तरदायी है। ड्रमरों की उप जाति नाम्बियार को इस रंग मंच के साथ निझावू के अभिनेता के रूप में जोड़ा जाता है (मटके के आकार का एक बड़ा ड्रम कुटियाट्टम की विशेषता है)। नाम्बियार समुदाय की महिलाएं इसमें महिला चरित्रों का अभिनय करती है और बेल धातु की घंटियां बजती है। जबकि अन्य समुदायों के लोग इस नाट्य कला का अध्ययन करते हैं और मंच पर प्रदर्शन में भाग ले सकते हैं, किन्तु वे मंदिरों में प्रदर्शन नहीं करते।

- चाक्यारकूंतु नृत्य-**केरल**

- केरल राज्य में आर्यों द्वारा प्रारम्भ किये गये चाक्यारकूंतु नृत्य शैली का आयोजन केवल मंदिर में किया जाता था और सिर्फ़ सवर्ण हिन्दू ही इसे देख सकते थे।
- नृत्यगार को कूत्तम्बलम कहते हैं।
- स्वर के साथ कथापाठ किया जाता है, जिसके अनुरूप चेहरे और हाथों से भावों की अभिव्यक्ति की जाती है

- कूडियाट्टम नृत्य -**केरल**

- **कूडियाट्टम नृत्य** या 'कोडियाट्टम नृत्य' भारत में प्रचलित कुछ प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से एक है। यह लम्बे समय तक चलने वाली नृत्यनाटिका है। यह नृत्य कुछ दिनों से लेकर कई सप्ताह तक चलता है। प्राचीन संस्कृतनाटकों का पुरातन केरलीय नाट्य रूप ही 'कूडियाट्टम' कहलाता हैकूडियाट्टम नृत्य को 'चाक्यार' और 'नंपियार' समुदाय के लोग प्रस्तुत करते हैं।

- पटाकोम नृत्य -**केरल**

- **पटाकोम नृत्य** केरल में किये जाने वाले शास्त्रीय नृत्यों की ही एक अन्य कला है। यह नृत्य अपनी तकनीकी सामग्री के कारण ही 'कोथू नृत्य' के समानांतर है

- कोथू नृत्य -**केरल**

- **कोथू नृत्य** केरल के प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों में से एक है। इस नृत्य का मंचन 'चकयार' जाति के पेशेवर कलाकारों द्वारा 'कोथामबम मंदिर' में किया जाता है। यह केरल की सबसें पुरानी एवं अजीब नाटकीय कला है। 'कोथू' शब्द का वास्तविक अर्थ कला के मूल रूप में नृत्य संलग्नता के महत्व के तौर पर समझा जा सकता है

- **कुम्मी नृत्य** -तमिलनाडु
- **गरबा नृत्य** -गुजरात राज्य का एक लोकप्रिय लोक नृत्य है, गरबा नृत्य गुजराती महिलाओं द्वारा किया जाने वाला गोलाकार नृत्य रूप है और यह नृत्य नवरात्रि, शरद पूर्णिमा, बसंत पंचमी, होली और अन्य उत्सवों में किया जाता है।
- **चरकुला नृत्य-उत्तर प्रदेश**
- छाऊ **या 'छऊ' एक प्रकार की नृत्य नाटिका है, जो पश्चिम बंगाल, बिहार और उड़ीसा के पड़ोसी राज्यों में अपने पारंपरिक रूप में देखने को मिलती हैछाऊ की तीन विधाएं मौजूद हैं, जो तीन अलग-अलग क्षेत्रों सेराई केला (बिहार), पुरुलिया (पश्चिम बंगाल) और मयूरभंज (उड़ीसा) से शरू हुई हैं। युद्ध जैसी चेष्टाओं, तेज़ लयबद्ध कथन, और स्थान का गतिशील प्रयोग छाऊ की विशिष्टता है**
- बिहु असम का प्राचीनतम व अत्यधिक महत्वपूर्ण उत्सव है। असम में तीन बिहू मनाए जाते हैं-बोहाग (बैसाख-अप्रैल के मध्य में)
- माघ (जनवरी के मध्य में), और
- काती (कार्तिक, अक्टूबर के मध्य में)
- कालबेलिया नृत्य **राजस्थान के प्रसिद्ध लोक नृत्यों में से एक है। यह नृत्य कालबेलिया, जो कि एक सपेरा जाति है, के द्वारा किया जाता है। कालबेलिया नृत्य में सिर्फ़ स्त्रियाँ ही भाग लेती हैं।**
- **रउफ नृत्य** -यह जम्मू एवं कश्मीर राज्य में सबसे प्रसिद्ध लोक-नृत्य है, जिसका आयोजन फ़सलों की कटाई हो जाने के पश्चात स्त्रियों द्वारा किया जाता है।

- सरहुल नृत्य -सरहुल नृत्य छत्तीसगढ़ राज्य में सरगुजा, जशपुर और धरमजयगढ़ तहसील में बसने वाली उरांव जाति का जातीय नृत्य है। इस नृत्य का आयोजन चैत्र मास की पूर्णिमा को रात के समय किया जाता है। यह नृत्य एक प्रकार से प्रकृति की पूजा का आदिम स्वरूप है।

- घूमर नृत्य -घूमर नृत्य राजस्थान के प्रसिद्ध लोक नृत्यों में से एक है। यह नृत्य राजस्थान में प्रचलित अत्यंत लोकप्रिय नृत्य है, जिसमें केवल स्त्रियाँ ही भाग लेती हैं

- पण्डवानी नृत्य -यह नृत्य छत्तीसगढ़ क्षेत्र में प्रचलित एकल लोक नृत्य है, जिसका प्रस्तुतीकरण समवेत स्वरों में होता है। इसके प्रमुख कलाकारों में झाडूराम देवांगन, तीजनबाई तथा ऋतु वर्मा के नाम काफ़ी प्रसिद्ध हैं।

- गिद्दा -गिद्दा पंजाब में महिलाओं द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है।

- ख़्याल नृत्य -ख़्याल नृत्य पश्चिमोत्तर भारत में स्थित राजस्थान राज्य के कई हिंदुस्तानी लोकनृत्य नाटकों में से एक है

-

प्रमुख बिंदु -

- गतका -पंजाब का मार्शल आर्ट
- मधुबनी- बिहार की एक चित्रकला

त्यौहार -राज्य

- बिहू - असम
- ओणम -केरल (महाबली से सम्बंधित , अतापु -एक रंगोली है जो ओणम से ही सम्बंधित है)
- पोंगल-तमिलनाडु
- बैशाखी -पंजाब
- तमाशा-महाराष्ट्र
- अमरनाथ - शिव की पूजा

- केदारनाथ-शिव की पूजा
- विश्वनाथ -शिव की पूजा
- जगन्नाथ -विष्णु कीपूजा
- आदि श्नकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ-

  १-जोशीमठ -उत्तर में

  २-द्वारका पीठ- पश्चिम में

  ३-गोवर्धन पीठ-पूर्व में

  ४-श्रृंगेरी पीठ -दक्षिण में
- शंकराचार्य ने पांचवे मठ की स्थापना-कांचीपुरम में की
- प्रमुख मंदिर

  1-विद्याशंकर मंदिर -कर्नाटक में

  २-राजरानी मंदिर- ओडिशा में '

  ३-कंदरिया महादेव मंदिर-मध्यप्रदेश

  ४-भीमेश्वर मंदिर- आंध्रप्रदेश \
- सूफिया कालम -भक्ति संगीत है - कश्मीर की

परिधान -राज्य

- बोकु -सिक्किम का
- २-मेखला -असंम
- ३-मुंडू -केरल
- ४-फेरन -कश्मीर
- सुविख्यात चित्र सत्यम शिवम् सुंदरम के रचनाकार -महेन्द्रनाथ सिंह
- के शंकर पिल्लई - कार्टूनिष्ट
- आर के लक्ष्मण -कार्टूनिष्ट
- कोरकू लोकनृत्य -महाराष्ट्र का
- मुकना -मणिपुर का मल्ल युद्ध -लाइ हरोबा भी मणिपुर का ही है
- थाली- उत्तराखंड का लोकनृत्य है
- तेरहताली -राजस्थान
- बुर्रा - आंध्रप्रदेश
- नटी- हिमाचलप्रदेश

- घुमर-राजस्थान
- ओजापालि - असम
- लुड्डी - हिमाचल प्रदेश
- जात्रा -पश्चिम बंगाल
- जाता -जतिन -बिहार
- सितार-वीणा और तंबूरा का (आविष्कार आमिर खुसरो ने की थी)
- वीणा - सबसे प्राचीन वाद्य यन्त्र (सादिक अली खान वीणा वादन से ही सम्बंधित है)
- सरोद वादक --उस्ताद अमजद अली खान , अली अकबर खान
- तबला वादक -जाकिर हुसैन , आल्ला रख्खा खान , किशन महाराज , वीरू मिश्रा
- सितार वादक - देबू चौधरी ,निखिल बनर्जी , रवि शंकर
- बासुरी वादक -हरी प्रसाद चौरसिया , एमएस सुब्बलक्ष्मी , पन्ना लाल घोष
- शहनाई वादक-बिस्मिल्ला खान
- सारंगी वादक-गोपालजी मिश्र ,
- पखावज वादक- कुदक सिंह ,अयोध्या प्रसाद
- संतूर वादक- शिव कुमार शर्मा , भजन सोपारी
- वायलिन वादक- वी जी जोग ,यहूदी मेनुहिन , कन्या कुमारी ,
- मृदंगम -टी वी गोपालकृष्ण
- चाक्यारकूथु केरल का मार्शल आर्ट है
- कौन किससे सम्बंधित है
- मोहिनीअट्टम-कलामंडलम क्षेमवती
- कथकली -शिवरामन
- भरतनाट्यम -लक्ष्मी विश्वनाथम ,प्रतिभा प्रहलाद , रुक्मणी देवी ,सोनल मान सिंह
- मणिपुरी -येन माधवी देवी
- कुचिपुंडी -वेम्पत्ति चिह्न सत्यम
- ओडिशी - इंद्राणी रहमान
- कथक -बिरजू महाराज
- कठपुतली कला- हिरेन भट्टाचार्या